Impact Factor : 1.883 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – V, Issue – I June 2016

# नागार्जुन के काव्य में प्रगतिवादी चेतना

**डॉ. बालाजी गायकवाड,**
**अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,**
**सिध्दार्थ महाविद्यालय, मुंबई.**

'प्रगति' यह शब्द संस्कृत के 'प्रगमन' शब्द से बना हैं। यह अंग्रेजी के 'प्रोग्रेस' शब्द का पर्यायवाची है। उसका सामान्य अर्थ उन्नती करना हैं।

मार्क्सवादी विचारधारा से संबंधित रचनाओं को प्रगतिवादी साहित्य नाम से संबोधित किया गया हैं। मार्क्स ने मुख्यत: समाजकों दो वर्गों मे विभाजित किया जो एक शोषक वर्ग जिसमें पूंजीपती, जमींदार, मिल मालिक, उद्योगपति आदि। दूसरेवर्ग में शोषित वर्ग जिनमें श्रमिक, मजदूर, किसान गरीब आदि। मार्क्सवाद शोषितों के प्रति सहानुभूति कर शोषण का विरोध करते हुए समाज में साम्यवादी समाज व्यवस्था स्थापित करना चाहता हैं। शोषितों को शोषकों के खिलाफ संघर्ष के लिए उत्तेजित करना उनका प्रमुख लक्ष हैं।

हिन्दी साहित्य में प्रगतिवादी चेतना का सूत्रपात प्रगतिवादी आन्दोलन के कारण हुआ। सन् १९३५ ई.में पेरिस में 'प्रोग्रेसिव राईटर्स एसोसियेशन' की स्थापना हो चूकी थी। भारत में डॉ. मुल्कराज आनन्द के प्रयासों से प्रगतिशिल लेखक संघ की स्थापना हुई। इसका पहिला अधिवेशन सन् १९३६ ई. में प्रेमचंद की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ था।

प्रगतिवादी साहित्य ने धर्म, ईश्वर, पाप–पूण्य, भाग्य, स्वर्ग–नरक को त्याागकर पूंजीपती वर्ग के प्रतिघृणा शोषित वर्ग की दीनता का चित्रण करते हुए उनके प्रति सहानुभूति प्रकट की है। शोषण का विरोध प्रगतिवाद का मूलतत्व हैं। प्रगतिशीलता के प्रतिरांगेय राघव लिखते हैं – ''जब हम प्रगति खोजते हैं कि कौन समाज की स्वतंत्रता में बाधा डालता हैं और कौन नहीं। जो जनसमाज को आगे बढाना हैं वही हमें प्रगतिशील दिखाई देता हैं।''

मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होकर हिन्दी काव्य को विकसित करनेवाले कवियों में प्रमुख हैं – नागार्जून, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन शास्त्री, शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामधारी सिंह 'दिनकर' नरेंद्र शर्मा आदि।

हिन्दी साहित्य के प्रगतिवादी कवियों में कवि नागार्जून का विशिष्ट स्थान हैं। कवि नागार्जून का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र हैं। शुरु में उन्होंने'यात्री' नाम से भी कुछ काव्य रचनाएँ की हैं। किन्तु बौध्द धम्म के अनुयायी बनने के बाद 'नागार्जून'नाम अपना लिया। नागार्जून के लग–भग डेढदर्जन काव्य ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। जिनमें प्रमुख हैं – युगधारा, सतरंगे पंखोवाली, प्यासी पथराई आँखें, तालाब की मछलियाँ, तुमने कहा था, खिचडी विप्लव देखा हमने, हजार–हजार

बाहोंवाली, रत्नगर्भ, तालाब की मछलियाँ, इस गुब्बारे की छाया में भस्मांकुर और भूमिजा आदि।

कवि नागार्जून ने जो देखा—जाना, अनुभव किया उसे ही अपने काव्य में विवेचित किया। शोषकों के प्रति अनास्था, घृणा प्रकट करते हुए गरीब, दलित, पिड़ित, मजदूर, महिला, किसान आदि सामान्यजन के प्रति संवेदना प्रकट की हैं। कवि नागार्जून के प्रति डॉ. अर्जून चव्हाण लिखते हैं—''नागार्जून समाजाभिमुख चेतना के ऐसे कवि हैं जिनकी प्रगतिशिल चेतना एक ओर आम जनता की दयनीय दशा को वाणी देती हैं तो दूसरी ओर स्थापित व्यवस्था के परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देती हैं।''[१]

कवि नागार्जून में मनुष्य के प्रति गहरी संवेदना हैं। वे उनके दु:ख, वेदना, पीड़ा को वाणी देना चाहते हैं।

मनुष्य के रुपमें उन्होंने समाज में रहकर उन्होंने अनुभूति पाई हैं। इसलिए उन्होंने स्वयं के प्रति स्पष्ट रुपसे कहा हैं कि वे पहले मनुष्य और बादमें कवि हैं। जैसे —

''कवि हूँ पीछे, पहले तो मैं मानव ही हूँ
सुख: सुविधा में हुलस—हुलस कर
दुख: दुविधा में झुलस—झुलस कर
सब जैसे अपने जीवन को बिता रहे हैं।
वैसे मैं भी अपना जीवन बिता रहा हूँ।''[२]

नागार्जून का काव्य आम मनुष्य का काव्य हैं। दलित, शोषित, पीड़ित, मजदूर, किसान, नारी आदि की पीडा की कविता हैं। डॉ. शिवकुमार मिश्र लिखते हैं — ''वह तमाम साहित्य जो आज भले ही बहुसंख्य जनता की समझ के दायरे में नहीं हैं किंतु शोषण और अत्याचार पर टिकी सत्ता की खिलाफत करता हुआ मनुष्य का, शोषित मनुष्य का, पक्षधर हैं, जनवादी साहित्य भले न कहा जाए, जनता का साहित्य जरुर हैं और हमारा समर्थन भी उसे हैं।''[३]

कवि नागार्जून ने देखा गरीब—पीडित, मजदूर—किसान की समस्याएँ— आजादी के तेरह साल बाद भी जैसी की वैसी हैं। सामान्य जन को लगा था कि, आजादी के पश्चात सबको भरपेट खाना मिलेगा, रहने के लिए मकान, पहनने के लिए कपड़ा किन्तु भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी, चोर बाजारी के कारण आजादी के बाद की इन सामान्य जन की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया।

''देखों धँसी—धँसी ये आँखे, पिचके—पिचके गाल
कौन कहेगा, आजादी के बीते तेरह साल।''[४]

प्रगतीवादी काव्य शोषक के विरुध्द नई चेतना लेकर रचा गया। नागार्जून ऐसा समाज निर्माण करना चाहते हैं कि जहाँ वर्ग भेद ना होकर समतामूलक समाज की नीव रखना चाहते हैं। व्यापारी और राजनेता समाज को वे साँठ—गाँठ से सामान्य जनता का शोषण करके लुट रहे हैं। वे

कैसे ऐशो अराम का जीवन बीता रहे हैं इसकी ओर संकेत करते हुए कवि नागार्जून लिखते हैं—

''खादी ने मलमल से अपनी साँठ—गाँठ कर डाली हैं।
बिड़ला, टाटा, डालमिया की तीसों दिन दिवाली हैं।''

प्रगतिवादी कवि दिनकर इस पूंजिपतिवादियों द्वारा निर्मित सामाजिक विषमता की खाई की ओर संकेत करते हुए अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हैं—

''श्वानों को मिलता दूध—वस्त्रभूखे बालक अकुलाते हैं।
माँ की छाती से चिपक ठिठूर जाड़े की रात बिताते हैं।।''

अंग्रेजोंने हमारे देश पर ढेंढसों वर्ष राज किया। हमारे देश के वीरों ने खुन की नदियाँ बहाकर देश को १५ अगस्त के दिन अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कर खुशिहाली का सपना देखा। अँग्रेज तो चले गए लेकिन व्यापारी, खद्दरधारी इस काले अंग्रेजोंने देशपर अपना कब्जा किया और चारों तरफ भ्रष्टाचार लुट—पाट करना शुरु किया। हम १५ अगस्त कों आज़ादी का जश्न मनाते है और २६ जनवरी को गणराज्य दिन मनाते हैं इस ओर कवि नागार्जून अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हूए कहते हैं—

''किसकी है जनवरी
किसका अगस्त हैं
कौन यहाँ सुखी हैं
कौन यहाँ मस्त हैं
सेठ ही सुखी हैं, मंत्री ही सुखी हैं
उसी की हैं जनवरी, उसी का अगस्त है।''[५]

कवि नागार्जून अंग्रेजों के चले जाने के बाद देशमें बसे शोषक, पूंजिपति, सेठ, नेता इन काले अंग्रेजों की तानाशाही के प्रति आजादी का आंदोलन खड़ा करना चाहते हैं। वे अपनी कविता 'पटनायक भूषण' में एक सवाल खड़ा करते हैं—

''तानाशाही जोर—जुलूम सहते रहे हो?
भगतसिंह, आजाद चंद्रशेखर, बाघा जतीन....
उनकी अगली कडी नहीं हो क्या तुम?''[६]

कवि नागार्जून का व्यंग्य मर्मभेदी रहा हैं। इस व्यंग्य परम्पराने भारतेन्दू से आकर नागार्जून में विकास पाया हैं। उनके व्यंग्य के प्रति डॉ. विश्वंभर मानव लिखते हैं :— ''हरिश्चन्द्र के युग के कुछ साहित्यकारों को छोडकर पिछले पचास वर्षों में नागार्जून जैसी तीखी और सीधी चोट करनेवाला व्यंग्यकार हमारे साहित्य में नहीं हुआ हैं।''[७]

नागार्जून ने अपनी काव्य रचनाओं में शोषक, राजनेता, सेठ, महाजन, पूंजिपति आदि। पर

अपने व्यंग्य बाणों का निषाणा लगाया हैं। वे धनपतियों की लिला को देखकर व्यंग्य करते हूए लिखते हैं –

''मन करता हैं
नंगा होकर कुछ घंटों तक सागर तट पर मैं खड़ा रहूँ
यों भी क्या कपडा मिलता हैं?
धनपतियों की ऐसी लीला।''[८]

राजनेता, जमाखोर, पूँजपति, आदि शोषकों के कारण जनता गरीबी, भूख और महँगाई की मार से तड़प–तड़प कर मर रहीं हैं। इन शोषित पीडितों के प्रति अपनी संवेदना प्रगट करते हुए कवि अपनी 'पुरानी जूतियों का कोरस'कविता में वे लिखते हैं–

''गिनती के चावल रोते हैं, महँगाई की मार में
जीरा हँसा भभाकर, भड़क नकली तेल बकाया में
आलू डोल रहे हैं, भिंडी सहमी खड़ी कतार में
देशी गेहूँ पडे दिखाई, सपनों कें कोठार में।''[९]

कवि नागार्जून एक सशक्त प्रगतिवादी चेतना के कवि हैं। समाज का जों बड़ा हिस्सा शोषित–पिड़ित सर्वहारावर्ग दलित, मजदूर, किसान आदि के प्रति संवेदना प्रकट करते हूए उनमें चेतना निर्माण करने का प्रयास किया है। उन्होंने उनमें परीवर्तन तथा मंगलमय जीवन को कामना की हैं। सेठ, मंत्री, पूँजपति, महाजन आदि शोषकों के प्रति घृणा व रोष प्रकट किया हैं। कवि नागार्जून ने सशक्त भाषा शैली में निम्नवर्गीय जनता का प्रतिनिधित्व किया हैं।

## संदर्भसूचि

१) नागार्जून और नारायण सूर्व के काव्यमें प्रगतिशिल चेतना, डा. अलका,फ्लैप से
२) युगधारा, नागार्जून, पृ. ७८–७९
३) अलोचना मैमासिक, सं. नामवर सिंह, पृ. ५६–५७.
४) हजार बाहोंवाली, नागार्जून, पृ. १२२
५) तुमने कहाँ था, नागार्जून, पृ. ८१
६) नागार्जून रचा संचयन, राजेश जोशी, पृ. ९५
७) मत प्रतिनिधि कवि, हरिचरण शर्मा, पृ. २३
८) नागार्जून रचना संचयन, राजेश जोशी, पृ. २५
९) पुरानी जुतियों का कोरस, नागार्जून, पृ. ६३